Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ मंगला गौरी पूजीविधि ॥

॥ जय मंगला गौरी माता ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्रावण मंगलवार का पूजन ॥

मंगला गौरी व्रत श्रावण मास के मंगलवारों को मनाया जाता है। किस मंगलवार से आरंभ करना है और पूजा प्रातः या संध्या में करनी है, यह परिवार के अनुसार बदल सकता है। अपने स्थान का श्रावण पंचांग देखें।

१. स्नान और संकल्प

स्नान कर साफ वस्त्र पहनें। देवी पार्वती के मंगला गौरी रूप का स्मरण करें। परिवार में प्रेम, स्वास्थ्य और मंगल की कामना से अपनी क्षमता के अनुसार व्रत का संकल्प लें। उपवास का स्वरूप स्वास्थ्य तथा पारिवारिक रीति से तय करें।

२. चौकी और कलश

चौकी पर स्वच्छ वस्त्र बिछाकर गौरी का चित्र या प्रतिमा रखें। कलश स्थापित करने की रीति हो तो स्वच्छ जल भरें। गणेशजी का स्मरण करें, फिर दीपक को सुरक्षित स्थान पर जलाएँ।

३. माता का पूजन

देवी को हल्दी-कुमकुम, अक्षत, फूल, चुनरी और श्रृंगार-सामग्री अपनी परंपरा के अनुसार अर्पित करें। धूप-दीप दिखाएँ, फल या मिठाई का भोग लगाएँ और श्रद्धा से माता को प्रणाम करें।

॥ कथा, आरती और समापन ॥

४. व्रत कथा सुनें

धर्मपाल, उनकी पत्नी और कमला से जुड़ी मंगला गौरी कथा पढ़ें या सुनें। परिवार के सदस्य साथ बैठ सकते हैं। कथा के अलग रूप मिलते हैं; घर में जो रूप प्रचलित हो, उसे समझकर श्रद्धा से ग्रहण करें।

५. आरती और प्रार्थना

माता गौरी की आरती करें और घर के सब लोगों के लिए सम्मान, साहस और सुख की प्रार्थना करें। कुछ क्षेत्रों में महिलाओं का मिलकर गीत, खेल या जागरण होता है; यह सभी परिवारों के लिए अनिवार्य नहीं है।

६. प्रसाद और भोजन

प्रसाद बाँटें। व्रत खोलने का समय और भोजन अपनी पारिवारिक रीति के अनुसार रखें। फलाहार या सामान्य भोजन में चिकित्सकीय जरूरतों का ध्यान दें। दवा या पानी रोकर व्रत जारी रखने का दबाव न लें।

हर वर्ष श्रावण के मंगलवार की तारीख बदलती है। इस पुस्तिका में स्थायी घड़ी का मुहूर्त नहीं दिया गया है।

॥ जय मंगला गौरी माता ॥

HarGharPanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"